आचार्य श्री जिनेश्वर सूरी जी के सहस्राब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष जी का संबोधन

मेरा और कोटा-हाड़ौती संभाग, राजस्थान के सभी लोगों का सौभाग्य है कि आचार्य श्री जिनेश्वर सूरी जी का सहस्राब्दी वर्ष का आगाज़ आज इस औद्योगिक नगरी, श्रेष्ठ नगरी से हुआ है, जो अध्यात्म की नगरी है और विशेष रूप से हमारे बीच में आचार्य श्री पीयूष सागर जी महाराज और साधु-सन्तों के संग, उनकी मौजूदगी में हुआ है।

मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि **1008** वर्ष पूर्व आचार्य श्री जिनेश्वर सूरी जी ने खरतरगच्छ चारे समाज की स्थापना की थी। हजारों साधु-सन्तों, साध्वियों ने देश के अलग-अलग क्षेत्रों के अंदर जाकर, गांव-ढाणी में जाकर भगवान महावीर के संदेश, विचारों और उनके सिद्धान्तों को देश और दुनिया में पहुंचाने का काम किया। उसमें खरतरगच्छ समाज का भी बहुत बड़ा योगदान है।

जब भी मैं जैन सन्तों के सानिध्य में आता हूं, उनका तप, त्याग, समर्पण, उनकी वाणी, उनका जीवन हम सबको नई प्रेरणा देता है। मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं कि मुझे आचार्य पीयूष सागर जी के दर्शन करने का मौका मिला।

मैं दानपाणी भी गया था, वहां भी आपके दर्शन करने का मुझे मौका मिला और मैंने उस समय भी कहा था कि चाहे कितनी ही व्यस्तता हो, मेरे लिए राजनीतिक व्यस्तता से ज्यादा अध्यात्म और आपके दर्शन करने का सौभाग्य ज्यादा बड़ी चीज है। यह सौभाग्य समाज के लोगों ने दिया।

मैं सहस्राब्दी समारोह के सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने आज मुझे आचार्य पीयूष सागर जी का दर्शन करने का मौका दिया है।

जब हम आचार्य जिनेश्वर सूरी जी के जीवन को देखते हैं, उनकी तप-तपस्या, उनके उस समय के आचार्य व्रत में संवाद-चर्चा और उस समय के जो राजा, दुर्लभ राजा थे, उन्होंने उनको एक सच्चा और नेक आचार्य कहा

था और आज यह समाज भी इसी तरीके से उनके पदचिह्नों पर, उनके बताए गए मार्ग पर चलकर एक सच्चे और नेक इंसान के रूप में देश और समाज की सेवा कर रहा है।

मैं देखता हूं कि यह समाज देश के अलग-अलग क्षेत्रों के अंदर सेवा का काम करता है। उस समय जिनेश्वर सूरी महाराज ने कहा था, जब पशु वध की ज्यादा परम्पराएं थीं, चाहे उस समय के शासन में हो, चाहे लोगों के जीवन में हो, कोई भी शुभ काम करना हो, तो पशु की बलि चढ़ाते थे, **19**वीं शताब्दी और **20**वीं शताब्दी तक एक लम्बा दौर यह पशुबलि का चला।

लेकिन आचार्य जिनेश्वर सूरी जैसे जो तपस्वी थे, उस समय उन्होंने इस बात का विरोध किया। आचार्य ने कहा कि हम महावीर स्वामी के विचारों-सिद्धांतों को जीवन में अपनाएं। जिसमें अगर एक फूल के अंदर भी कीड़ा होता है तो उस जीव की भी हत्या न हो, पशु हत्या तो उनके लिए एक बहुत बड़ी बात है।

इसलिए उस समय, हजारों वर्ष पूर्व **24**वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने जो विचार दुनिया को दिया था, उस समय की दुनिया किस तरह की थी - देश में हिंसा का वातावरण था, अशांति थी, असत्य का वातावरण था, पशु बलि को परमात्मा का वरदान मानते थे, देवी का वरदान मानते थे। उस समय उन्होंने एक विचार दुनिया को दिया और विचार दिया कि अपने तप और तपस्या से, अपनी साधना से, अपने व्रत से और शरीर के तप और तपस्या से ही लोगों को उनके जीवन और दर्शन को समझने का मौका मिला।

आज दुनिया के अंदर देखें, जैन संत, अरिहंत हों, आचार्य हो, उपाध्याय हो, साधु-संत हों, साध्वियां हों, उनकी तप, त्याग और तपस्या, उनका संयम, उनका वात्सल्य, उनका प्यार और उनका जीवन देखने से ही व्यक्ति को नई प्रेरणा मिलती है।

उन्होंने अपने शरीर को तप और तपस्या में तपाकर एक संयम व्रत का पालन करके और मुंह से जिनवाणी निकालकर, भगवान की वाणी निकालकर आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से समाज और जीवन को बदलने का काम किया है।

आज यही कारण है कि जब हम **21**वीं शताब्दी में चल रहे हैं तो ऐसे अरिहंतों, आचार्यों, उपाध्यायों, संतों और साधुओं के कारण ही दुनिया में भारत **21**वीं शताब्दी में नेतृत्व करेगा। हम भौतिक साधनों से नहीं, बल्कि हम

आध्यात्मिक ज्ञान से दुनिया का नेतृत्व करेंगे, सत्य, अहिंसा और भगवान महावीर के विचार तथा सिद्धांतों से नेतृत्व करेंगे।

आज ये विचार और सिद्धांत केवल भारत ही नहीं, दुनिया के कई देशों में है। वहां जैन का मतलब सात्विक, इसका मतलब यह है कि जैन भोजन से जीवन शुरू करो, जैन जीवन को जीने की कल्पना करो। आप जब विदेशों में भी जाएंगे तो सात्विक भोजन मतलब, जैन भोजन, अहिंसा मतलब भगवान महावीर का विचार, सत्य मतलब भगवान महावीर का विचार, अपरिग्रह, जो कुछ भी है, समाज के लिए है।

आज दिशा पलटी है। हमने कोरोना जैसी आपदा की स्थिति के अंदर देखा है। दुनिया के बड़े देश, विकसित देश भौतिक संसाधनों और इंफ्रास्ट्रक्चर में हमसे बड़े थे, लेकिन हमारी सामूहिक शक्ति, हमारी आध्यात्मिक शक्ति, अपरिग्रह का विचार, जिसके कारण संपूर्ण समाज ने अभाव, वंचित गरीब व्यक्तियों को देखा और अपना समर्पण किया, धन का समर्पण किया तथा सेवा का समर्पण किया। उस समय जिससे जो भी बना, उसने उस आपदा की स्थिति में किया। यह विचार किसने दिए**?** यह विचार भगवान महावीर ने दिए।

दुनिया में, विश्व के अंदर भयंकर प्रतिशोध की भावना होती है, उस समय भी भगवान महावीर के विचार दुनिया के देशों को एक नई दिशा देने का काम करते हैं। इसीलिए मुझे जब भी मौका मिलता है, तो मेरी कोशिश रहती है और प्रयास रहता है कि मैं आचार्यों और साधु-संतों का दर्शन करूं। उनकी जिनवाणी, आध्यात्मिकता और सत्य ही हमें सही मार्ग पर लेकर जाता है। हम राजनीतिक और सामाजिक जीवन में काम करते हैं। उनका तप, तपस्या, संयम, व्रत का कुछ अंश हमारे जीवन में भी आए, हम ऐसी प्रार्थना उनके चरणों में करते हैं।

मुझे खुशी है कि आज इसका आगाज कोटा की धरती से हुआ है। गोलचा जी ने कहा है और मैं निश्चित रूप से **25, 26, 27** दिसंबर को भी आऊंगा, क्योंकि संसद का सत्र निपट जाएगा। मेरी एक ही पीड़ा रहती है कि कुछ क्षण मौका मिलता है, जब हम आचार्यों को सुनते हैं, लेकिन जब मैं समाज में जाता हूं तो स्वागत समारोह, तिलक, माला में बहुत समय लगता है। उस समय मेरे मन में बहुत कष्ट होता है।

हम आचार्य के दर्शन करने और उनकी जिनवाणी को सुनने आते हैं। मैं जैन समाज से हमेशा कहता हूं कि स्वागत समारोह के समय को त्याग कर जिस क्षण, जो मौका मिल जाए, आचार्य जी के मन, कर्म, वचन से हमें जो

कुछ भी आध्यात्मिक ज्ञान मिलेगा, वह हमारी दिशा को तय करेगा। मैं पुन: आचार्य पीयूष सागर जी के चरणों में शत-शत नमन करता हूं, वंदन करता हूं, आचार्य संघ के चरणों में वंदन करता हूं।

हमें सौभाग्य मिला है कि चातुर्मासिक प्रवचन दानबाड़ी में हुआ। पूरे देश में दानबाड़ी का नाम दादा के नाम से जाना जाता है। मुझे आचार्य जिनेश्वर सूरी जी के जीवन के बारे में कुछ क्षण जानने का मौका मिला। मेरे पास समय कम रहा, लेकिन मैंने जो कुछ भी पढ़ा, उसमें उनके जीवन, दर्शन, उनके विचार, उनका आध्यात्मिक ज्ञान, उस समय की उनकी तप और तपस्या से किस तरीके से उन्होंने संपूर्ण जीवन को समाज को समर्पित कर दिया।

उस समय के राजाओं ने भी उनसे कहा था कि उन्होंने सच्चाई, नेक और सत्य पर चलने वाला एक नेक इंसान बनने की एक परंपरा शुरू की है। आज हजारों वर्षों के बाद भी आप कल्पना करेंगे कि **1008** वर्ष पूर्व उस समय उन्होंने यह विचार दिया था।

आज दुनिया कहती है कि सत्य और नेकी पर चलो, अच्छे आचरण पर चलो, तो दुनिया में आज भी यह संदेश जारी है। आज उनका **21** वीं शताब्दी में संदेश है।

निश्चित रूप से उनका संदेश, नेकी, अच्छा आचरण, अच्छा विचार, अच्छी सोच, अच्छा खान-पान ये सब जैन दर्शन के अंग हैं। जैन दर्शन को जितना पढ़ेंगे, व्यक्ति उतना ही सात्विक होगा और सत्य के मार्ग पर चलेगा।

मैं निश्चित रूप से सोचता हूं कि यह खरतरगच्छ समाज तक ही सीमित न रहे, यह शताब्दी वर्ष जन-जन का वर्ष बने। हर व्यक्ति आचार्य जिनेश्वर सूरी जी के जीवन को जाने। जिस तरीके से उनका जीवन था, उसी तरीके से लोग समाज के सभी क्षेत्रों के अंदर सत्य और नेकी पर चलें और सात्विक आचरण करे। इंसान को जो जीवन मिला है, उसका जीवन समाज को समर्पित रहे।

जितना आध्यात्मिक जीवन होगा, व्यक्ति उतना ही संयम में रहेगा, तपस्या में रहेगा और संयमित रहेगा। अवसाद और तनाव की स्थिति के अंदर आध्यात्मिक ज्ञान ही व्यक्ति को एक नई ऊर्जा देता है। इसलिए आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, उसको आध्यात्मिक ज्ञान की ओर जाना पड़ेगा और उसी से उसको ऊर्जा मिलेगी।

उसको भौतिक संसाधनों से ऊर्जा नहीं मिल सकती है। भौतिक संसाधन, धन, लालच से व्यक्ति कभी भी

सुशोभित नहीं हो सकता है। संयम, व्रत, तप, तपस्या और सात्विक जीवन से ही व्यक्ति का सही जीवन निकल सकता है। आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। जय जिनेंद्र।